CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

जयसमंद झील का जनजातीय आर्थिक क्रियाओं पर प्रभाव

रेशमा रहमान
निदेशिका
शिखर एजुकेशन कोचिंग इंस्टिट्यूट, उदयपुर
Email: Reshmarehman1212@gmail.com, Mob.-09462472977

First draft received: 12.11.2024, Reviewed: 25.11.2024, Final proof received: 10.12.2024, Accepted: 25.12.2024

सार-संक्षेप

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य उदयपुर जिले में स्थित जयसमंद झील का विश्लेषण करना तथा वहाँ रहने वाली जनजातियों की प्रमुख आर्थिक क्रियाओं का विस्तार से अध्ययन करते हुए झील के निकटवर्ती होने पर इन आर्थिक क्रियाओं पर पड़ने वाल प्रभावों का वर्णन करना है।

मुख्य शब्द : *जनजाति, आर्थिक क्रियाएँ, झील आदि.*

प्रस्तावना

मानव जीवन के लिए जल अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यकता है। जीवित रहने के लिए वायु के बाद दूसरा स्थान जल का ही है। जल संसाधनों को पृथ्वी पर जल के वितरण और प्राप्ति के अनुसार भूमिगत जल और सतही जल दो रूपों में बाटाँ जा सकता है। भूमिगत जल के रूप में कुएँ, नलकूप, हैण्डपम्प आदि तथा सतही जल स्त्रोतों में नहरें, झीलें, तालाब, जलाशय आदि आते हैं। इन जल संसाधनों से मानव का संबंध अत्यन्त गहरा और व्यापक है। जल संसाधनों का प्रभाव मानव जीवन की प्रत्येक गतिविधि पर पड़ता है इसमें कोई संशय नहीं है।

अध्ययन क्षेत्र

उदयपुर जिला राजस्थान राज्य के दक्षिण में स्थित हैं सन् 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या राज्य की कुल जनसंख्या का 16.51 प्रतिश है। जिले का अधिकांश भाग पहाड़ी, वनों से घिरा हुआ तथा आदिवासी बाहुल्य से उदयपुर जिले में कई नदियाँ, तालाब तथा झीले है इसीलिए इसे ''झीलों की नगरी'' भी कहा जाता है।

राजस्थान राज्य की झीलों को दो भागों में बाँटा जा सकता है मीठे पानी की झीलें एवं खारे पानी की झीले। राज्य की सारे पानी की झीलों को ''टेथिस सागर'' का अवशेष माना गया है। जयसमंद झील उदयपुर जिले से 51 किलोमीटर द॰पू॰ में स्थित मीठे पानी की सबसे बड़ी कृत्रिम झीले है। झील का निर्माण 1685 में महाराणा जयसिंह द्वारा गोमती नदी पर बाँध बनवाकर करवाया गया था। यह भारत की दूसरी सबसे बड़ी कृत्रिम झील तथा विश्व की मीठे पानी की दूसरी सबसे बड़ी झील है जिसे स्थानीय लोग 'ढेबर झील' के नाम से जानते है। यह झील 15 किलोमीटर लम्बी तथा 8 किलोमीटर चौड़ी है। वर्षाकाल में इसका कुल क्षैत्रफल लगभग 500 वर्ग किमी॰ हो जाता है।

झील में कुल सात टापू हैं, जहाँ भील एवं मीणा जनजाति के लोग निवास करते है। इनमें सबसे बड़े टापू का नाम ''बाबा का भगड़ा'' एवं दूसरे बड़े टापू का नाम ''प्यारी'' है। 1950 में जयसमन्द झील से श्यामपुरा एवं भाट नहरें निकाली गई है। झील के निकट एक पहाड़ी पर 'चित्रित हवामहल' एवं 'रूठी रानी का महल' स्थित है। जहाँ पर उदयपुर रियासत की शीतकालीन राजधानी होती थी।

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र में पाई जाने वाली जनजातियों के वितरण को समझना।
2. जनजातियों की प्रमुख आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन
3. प्रमुख आर्थिक क्रियाओं पर झील द्वारा पड़ने वाले प्रभावों को समझना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन करने के लिए पूर्वतः द्वितीयक तथ्यों पर आधारित वर्णनात्मक शोध प्ररचना को चुना है। जर्नल, पुस्तकें, रिपोर्ट तथा जनगणना 2011 के आँकड़ों को सैकण्डरी स्त्रोतों के रूप में लिया है।

अध्ययन क्षेत्र में जनजातियों का वितरण

प्रस्तुत शोध पत्र दक्षिणी राजस्थान के संदर्भ में है। भौगोलिक दृष्टि से अरावली क्षेणियों के पर्वतपदीय भागों में वनाच्छादित भाग पर जनजातियाँ निवास कर रही हैं।

अध्ययन क्षैत्र : अनुसूचित जनजातियों का वितरण (प्रतिशत में)

क्र॰ सं॰	उदयपुर जिला	अनुसूचित जनजातियों का वितरण (% में)		
		कुल	ग्रामीण	नगरीय
1.	मावली	20.50	21.96	10.33
2.	गोगुन्दा	49.88	51.39	14.39
3.	कोटड़ा	95.82	95.82	0
4.	झाड़ोल	75.78	75.78	0
5.	गिर्वा	27.60	53.26	5.77
6.	वल्लभनगर	18.86	19.88	10.98
7.	लसाड़िया	88.17	88.17	0
8.	सलुम्बर	53.84	56.94	2.59
9.	सराड़ा	63.65	66.66	21.33
10.	ऋषभदेव	84.18	87.82	19.21
11.	खेरवाड़ा	73.26	75.72	8.85

जनजातियों की अर्थव्यवस्था

भारत में प्राचीन काल से आदिवासी जातियाँ जंगलों में अपना जीवन यापन कर रही हैं। इन जातियों का मुख्य व्यवसाय कृषि करना, वन उपज को एकत्रित करना, पशुपालन, आखटे, जंगलों से अनुपयोगी लकड़ियाँ निकालना, झुम पद्धति द्वारा कृषि करना तथा काम मिलने पर मजदूरी करना आदि है।

जयसमंद झील का आर्थिक क्रियाओं पर प्रभाव

भारतीय आदिवासियों का एक बड़ा भाग वनों पर निर्भर रहता है। यह प्रायः वनों के अन्दर या उसके निकट निवास करता है। भोजन जमा करना ही उनकी अर्थव्यवस्था की प्रमुखता है। ये लोग झुम पद्धति से कृषि करते है। दूसरी श्रेणी में वे आदिवासी आते हैं जो भोजन संग्रहिता तथा आदिम कृषि प्रकारों का उपयोग करते है। मीठे पानी की झील के निकट रहने से कृषि के लिए पानी की उपलब्धता आसानी से हो जाती है जिससे फसलों की गुणवत्ता में वृद्धि होती है तथा आर्थिक व्यवस्था की सुदृढ़ होती है।

पशुपालन

जनजातियाँ कृषि कार्यों के साथ–साथ पशुपालन एवं जंगली जानवरों का शिकार करके अपना पेट भरते थे। मवेशियों को ये अपनी बहुमूल्य सम्पत्ति मानते थे। जनजातियाँ अपने पास कम से कम 20 से लेकर 50 गाय, भैस, भेड़, बकरी आदि रखता था। झीलों के आसपास वन क्षेत्र होने के कारण यह खरगोश, हिरण, सुअर आदि जंगली जानवरों का शिकार करके अपना पेट भरते एवं मनोरंजन भी करते थे। वनीय क्षेत्र होने के कारण शिकार भी इनके लिए आजीविका का एक साधन है। तथा इनके द्वारा पलो जाने वाले पशुओं के चारे की व्यवस्था भी वनों से हो जाती है।

जयसमन्द मीठे पानी की झील होने के कारण जनजातियों द्वारा मछली पकड़ने का कार्य भी यहाँ बड़े पैमाने पर किया जाता है जो कि इनकी अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख घटक है। पकड़ी गई मछलियों को अच्छे दामों पर बेचकर भी ये आजीविका प्राप्त करते है।

वन सम्पदा का उपयोग

लघु वनों से उत्पादित वस्तुएँ जैसे– आँवला, अरीठा, गौंद, केवड़ी, कड़ैया, बावर, मुसली, शहद आदि बैचने का कार्य तथा जड़ी–बूटियाँ जैसे आँवला का बीज, हेतड़ी, आमेदा, आक, कटनिया, ब्राह्यी, बोहड़ा, धतुरा बीज इत्यादि को बेचना भी इनके प्रमुख कार्यों में से एक है।

अन्य कार्य

अन्य कार्यो में जैसे नाश्ते की स्टॉल लगाना, मछलियों का दाना, पंचर बनाना, गाइड के रूप में कार्य करना आदि कार्य भी झील के आसपास के क्षेत्र में रहने वाले आदिवासियों द्वारा किया जात है।

निष्कर्ष व सुझाव

1. झीले, नदियाँ आदि प्रकृति की अमूल्य धरोहर है। साथ ही प्रकृति की सुन्दरता का भी प्रमुख स्त्रोत हैं।
2. झीलों के आसपास के क्षेत्र हमेशा स्वच्छ व सुन्दर रहें इसके लिए सरकार को भरसक प्रयास करना चाहिए।
3. ऐसे क्षेत्रों में पर्यटन का और अधिक विकास किया जाना चाहिए जिससे जनजातियों को कमाने के और अधिक अवसर प्राप्त हो। साथ ही पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए विभिन्न ट्यूर पैकेज की भी व्यवस्था की जानी चाहिए।
4. जनजातियों को आर्थिक रूप से और अधिक सक्षम बनाने के लिए केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा लाभदायक योजनाओं का संचालन किया जाना चाहिए।
5. झीलों में किसी प्रकार का कचरा और प्रदूषण न फैले इस ओर भी अधिकाधिक प्रयास किए जाने चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कोटड़ा मनोहर सिंह, आँजणा एस॰आर॰ (2018), राजस्थान ज्ञान संग्रह 2019, दक्ष प्रकाशन, जयपुर।
2. जैन, हुकुमचन्द एवं माली, नारायणलाल (2017) राजस्थान का इतिहास कला, संस्कृति, साहित्य, परम्परा एवं विरासतः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
3. सक्सेना, हरिमोहन (2018), ''राजस्थान का भूगोल'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
4. भारत की जनगणना, उदयपुर ब्मदबने 2011
5. शर्मा नीलम : ''अपना खेल अपना कमा योजना : बदलती आदिवासियों की तकदीर'' कुरूक्षेत्र, अक्टूबर 2012
6. मीणा, राजीव कुमार (2019), आदिवासियों का पर्यावरण सर्वेक्षण एवं सतत विकास में योगदान और बेदखली की समस्या व समाधान, जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कोलरली रिसर्चेस इन एलाइड एज्युकेशन, 16 (4), 1643–1648
7- Advani, M and B.L. Nagda 1997. "Sustainable Development and Tribal Population" in Rajasthan, Sustainask Development in Tribal and Backward. New Delhi: Indrs Publishing company.